IMAGINATIONS

A Multiskills English Course Book

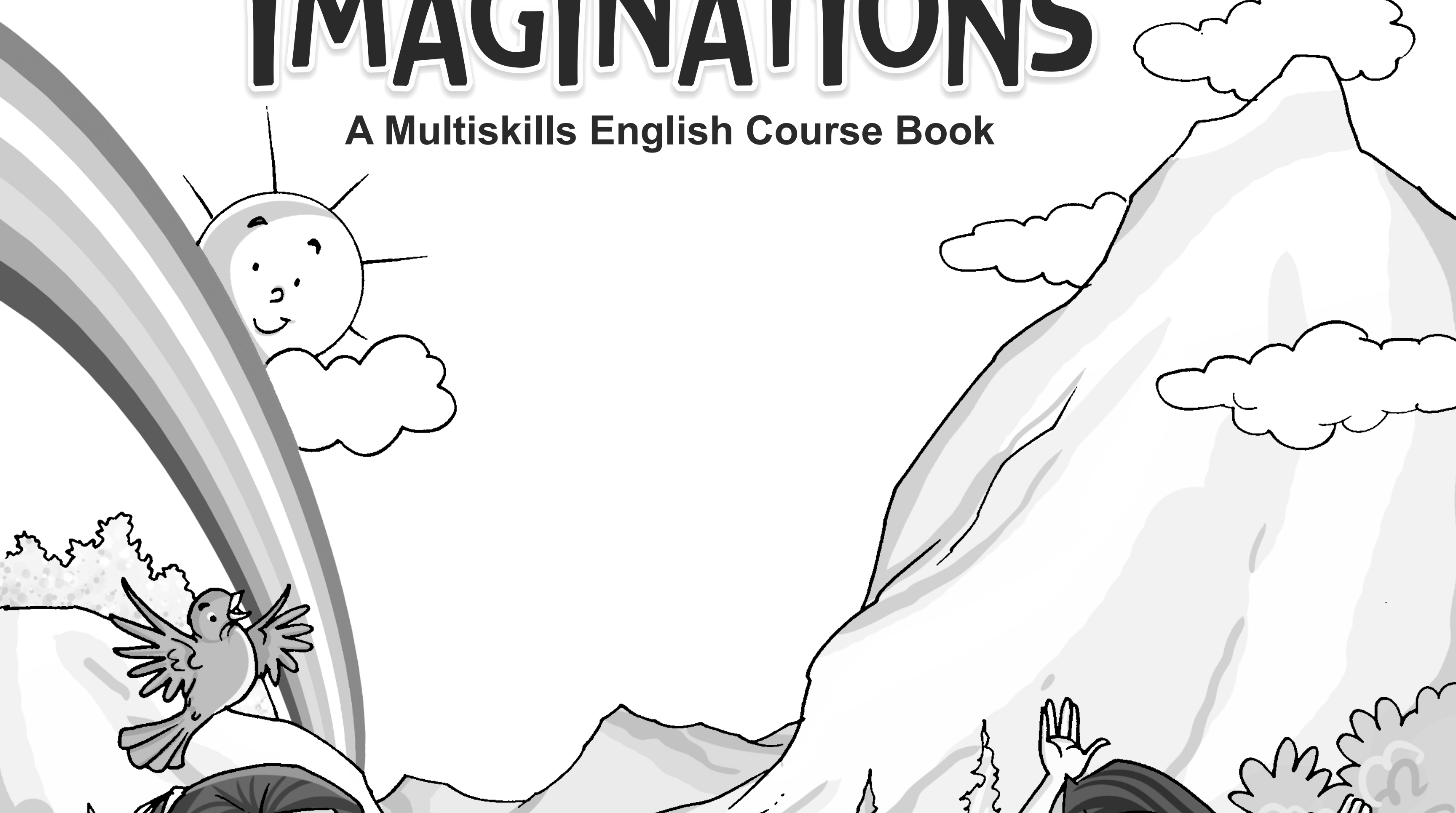

8

GRADE

1. Bepin Choudhury's Lapse of Memory

आइए आरंभ करें!

क्या आपकी स्मरणशक्ति अच्छी है? क्या आपकी स्मरणशक्ति ने कभी आपके साथ कोई चाल चली है? विस्मृति अक्सर आपको मुश्किल स्थिति में डाल देती है। मगर आपके जीवन के एक भाग को पूरी तरह भूल जाना आपको पागल कर सकता है। इस कहानी में बिपिन बाबू लगभग पागल हो जाते हैं क्योंकि वे अपने राँची के प्रवास को याद नहीं कर पा रहे हैं। वह जोर दे कर कहते हैं कि वह कभी राँची नहीं गए यद्यपि इसके विपरीत इसके अनेक गवाह हैं। आखिर राज क्या है?

I

प्रत्येक सोमवार, काम से वापस आते समय, बिपिन चौधरी पुस्तकें खरीदने के लिए न्यू मार्केट में कालीचरण के यहाँ रुकते। अपराध की कहानियाँ, भूतों की कहानियाँ और रहस्यमयी कहानियाँ। पूरा सप्ताह व्यतीत करने के लिए उन्हें एक बार में कम-से-कम पाँच खरीदने होते। वह अकेले रहते, कम घुलते-मिलते, उनके कम मित्र थे और बेकार की बातचीत में समय बिताना पसंद नहीं था। आज कालीचरण के यहाँ बिपिन बाबू को आभास हुआ कि कोई उन्हें पास से देख रहा है। वह मुड़े और स्वयं को एक गोल चेहरे वाले, विनम्र दिखने वाले व्यक्ति को देखते पाया, जो अब मुस्कराने लगा।

''मुझे नहीं लगता आप मुझे पहचानते हैं।''

''क्या हम पहले कभी मिले हैं?'' बिपिन बाबू ने पूछा।

वह व्यक्ति बहुत आश्चर्यचकित लगा। ''हम एक सप्ताह प्रत्येक दिन मिले। मैंने आपको हुडरू झरने ले जाने के लिए एक कार की व्यवस्था की थी। 1958 में। राँची में। मेरा नाम परिमल घोष है।''

''राँची?''

अब बिपिन बाबू को एहसास हुआ वह नहीं बल्कि यह वह व्यक्ति है जो गलती कर रहा था। बिपिन बाबू राँची कभी नहीं गये थे। वह कई बार जाने वाले थे मगर कभी जा नहीं पाये। वह मुस्कुराए और बोले, ''क्या आप जानते हैं मैं कौन हूँ?''

उस व्यक्ति ने अपनी भौंहे उठाईं, जीभ काटी और बोला, ''क्या मैं आपको जानता हूँ? बिपिन चौधरी को कौन नहीं जानता?''

अब बिपिन बाबू पुस्तकों की अल्मारियों की ओर मुड़े और बोले, ''फिर भी आप गलती कर रहे हैं। अक्सर हो जाती है। मैं कभी राँची नहीं गया।''

वह व्यक्ति अब जोर से हँसा।

''आप क्या कह रहे हैं, मि० चौधरी? आप हुडरू में गिर गये थे और अपना घुटना काट लिया था। मैं आपके लिए आयोडीन लाया था। मैंने आपके अगले दिन नेतरहाट जाने के लिए एक कार की थी, मगर घुटने में दर्द के कारण आप ऐसा नहीं कर पाये। क्या आपको कुछ भी याद

नहीं आ रहा? आपके एक जानने वाले उन्हीं दिनों राँची में थे। मि० दिनेश मुखर्जी। आप एक बंगले में रहे थे। आपने कहा था कि आपको होटल का भोजन पसंद नहीं आता और अपना भोजन बावर्ची द्वारा पकाया जाना पसंद करेंगे। मि० मुखर्जी अपनी बहन के पास रुके थे। आप दोनों में चाँद पर उतरने से लेकर बड़ी बहस हुई थी, याद है? मैं आपको और बताता हूँ : आप अपनी भ्रमण-यात्राओं पर बैग साथ रखते थे जिसमें पुस्तकें होती थीं। मैं सही हूँ या नहीं?''

आँखें अभी भी किताबों पर लगाये बिपिन बाबू धीरे से बोले।

''आप '58 के किस महीने की बात कर रहे हैं?''

व्यक्ति बोला, ''अक्टूबर।''

''नहीं, श्रीमान,'' बिपिन बाबू बोले। ''मैंने '58 की पूजा कानपुर में एक मित्र के साथ बिताइ थी। आप गलती कर रहे हैं। आपका दिन शुभ हो।''

मगर वह व्यक्ति न तो गया और न ही बोलना बंद हुआ।

''बहुत अजीब बात है। एक शाम मैंने आपके बंगले के बरामदे में आपके साथ चाय पी थी। आपने आपके परिवार के बारे में बताया था। आपने बताया था कि आपके बच्चे नहीं हैं और दस वर्ष पूर्व आपकी पत्नी का देहान्त हो चुका था। आपका इकलौता भाई पागल होकर मरा था इसलिए आप राँची के मानसिक अस्पताल नहीं जाना चाहते थे...''

जब बिपिन बाबू ने पुस्तकों का भुगतान कर दिया था और दुकान से बाहर जा रहे थे, वह व्यक्ति घोर अविश्वास के साथ उन्हें देख रहा था।

II

बिपिन बाबू की कार बर्ट्राम स्ट्रीट में लाइटहाउस सिनेमा के पास सुरक्षित खड़ी थी। कार में घुसते हुए उन्होंने ड्राइवर से कहा, ''सीताराम, केवल गंगा के किनारे चलाओ।'' स्ट्रैंड रोड पर जाते हुए बिपिन बाबू पछता रहे थे कि उन्होंने उस घुसपैठिए की बातों पर इतना ध्यान क्यों दिया। वह कभी राँची नहीं गये थे—उस बारे में कोई प्रश्न ही नहीं था। ऐसा हो ही नहीं सकता कि वह ऐसी घटना को भूल जाए जो केवल छह या सात वर्ष पूर्व हुई हो। उनकी स्मृति बहुत अच्छी थी। जब तक नहीं—बिपिन बाबू का सिर घूमने लगा।

क्या वह पागल हो रहे थे? मगर ऐसा कैसे हो सकता है? वह हर दिन अपने कार्यालय में काम कर रहे थे। वह एक बड़ी फर्म थी और वह एक उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य कर रहे थे। उन्हें पता नहीं था कि कभी कुछ गम्भीर रूप से गलत हुआ हो। उन्होंने आज ही एक महत्त्वपूर्ण मीटिंग में आधा घंटा बोला था। और फिर भी...

और फिर भी वह व्यक्ति उनके बारे में बहुत कुछ जानता था। कैसे? वह कुछ अंतरंग बातें जानता था। पुस्तकों का बैग, पत्नी का देहान्त, भाई का पागलपन...एकमात्र गलती उनके राँची जाने के बारे में थी। नहीं, गलती नहीं, एक जानबूझ कर बोला गया असत्य। '58 में, पूजा के दौरान, वे अपने मित्र हरिदास बागची के यहाँ कानपुर में थे। बिपिन बाबू को केवल लिखना था—नहीं, हरिदास को लिखने का कोई तरीका नहीं था। बिपिन बाबू को अचानक याद आया कि हरिदास कुछ सप्ताह पहले अपनी पत्नी के साथ जापान चले गये थे और उनके पास उनका पता नहीं था।

मगर प्रमाण की आवश्यकता क्या थी? वह स्वयं जानते थे कि वे राँची नहीं गये थे—और वह ही था।

नदी की समीर स्फूर्तिदायक थी, मगर फिर भी बिपिन बाबू के मन में थोड़ी-सी बेचैनी बनी रही। हेस्टिंग्स के पास, बिपिन बाबू ने अपनी पतलून को ऊपर मोड़ कर अपने दाएँ घुटने को देखने का निर्णय लिया।

वहाँ एक इंच लम्बे पुराने घाव का निशान था। यह बताना असम्भव था कि चोट कब लगी थी। क्या वह बचपन में कभी नहीं गिरे थे और उनके घुटने पर चोट नहीं लगी थी? उन्होंने ऐसी किसी घटना को याद करने का प्रयास किया मगर नहीं कर पाये।

तब बिपिन बाबू को अचानक दिनेश मुखर्जी का ख्याल आया। उस व्यक्ति ने कहा था कि दिनेश भी उसी समय राँची में थे। उनसे पूछना वास्तव में सबसे बढ़िया कार्य होगा। वह पास में ही बेनीनंदन स्ट्रीट में रहते थे। अभी जाने में कैसा रहेगा? लेकिन यदि वह वास्तव में राँची नहीं गये थे, दिनेश क्या सोचेंगे अगर बिपिन बाबू ने पुष्टि के लिए पूछा तो? वह सम्भवत: इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि बिपिन बाबू पागल होते जा रहे हैं। नहीं, उनसे पूछना हास्यास्पद होगा। और वह जानते थे कि दिनेश का कटाक्ष कितना निर्दयी होता है।

अपनी वातानुकूलित बैठक में शीतल पेय को घूँट लेते हुए, बिपिन बाबू को फिर से राहत महसूस हुई। कितना परेशान किया। केवल इसलिए कि उनके पास करने को कुछ नहीं है, वो दूसरों को परेशान करते हैं।

रात के भोजन के पश्चात् नये उपन्यासों में से एक के साथ बिस्तर में आराम से लेटे हुए, बिपिन बाबू न्यू मार्केट में व्यक्ति के बारे में सब कुछ भूल गए।

अगले दिन कार्यालय में, बिपिन बाबू ने ध्यान दिया कि हर गुजरते घंटे के साथ, पिछले दिन की घटना उनका अधिकाधिक दिमाग घेर रही थी। अगर वह व्यक्ति बिपिन बाबू के बारे में इतना जानता था, तो वह राँची की यात्रा के बारे में गलती कैसे कर सकता था?

दिन के भोजन से पूर्व बिपिन बाबू ने दिनेश मुखर्जी को फोन करने का सोचा। इस प्रश्न को फोन पर पूछना ही बेहतर होगा, कम-से-कम उनके चेहरे पर शर्मिंदगी दिखाई तो नहीं देगी।

टू-थ्री-फाइव-सिक्स-वन-सिक्स। बिपिन बाबू ने नम्बर डायल किया।

''हलो।''

''क्या दिनेश बोल रहे हैं? बिपिन बोल रहा हूँ!''

''ठीक है—क्या समाचार है?''

''मैं केवल जानना चाहता था कि क्या तुम्हें वह घटना याद है जो '58 में हुई थी।''

'' '58? कौन-सी घटना?''

''क्या तुम पूरे वर्ष कलकत्ता में थे? पहली बात मैं यह जानना चाहता हूँ।''

''केवल एक मिनट रुको... '58... मुझे मेरी डायरी में जाँचने दो।''

एक मिनट के लिए सन्नाटा था। बिपिन बाबू अपने दिल की धड़कन बढ़ते हुए महसूस कर रहे थे। उन्हें थोड़ा पसीना आ रहा था।

''हलो।''

''हाँ।''

''मुझे मिल गया। मैं दो बार बाहर गया था।''

''कहाँ?''

''एक बार फरवरी में—पास में ही—कृष्णानगर एक भांजे की शादी में गया था और फिर...तुम्हें तो इस का पता होगा। राँची की यात्रा! तुम भी वहाँ थे। बस यही है। मगर यह सब जासूसी किस लिए?''

''नहीं, मैं केवल चाहता था—कोई बात नहीं, धन्यवाद।''

बिपिन बाबू ने रिसीवर नीचे पटक दिया और अपने हाथों से अपना सिर पकड़ लिया। उन्हें अपना सिर घूमता सा लगा। उनके शरीर में सिहरन से फैलती प्रतीत हो रही थी। उनके टिफिन बॉक्स में सैंडविच थे, मगर उन्होंने वे खाए नहीं। उनकी भूख मर गई थी।

III

दोपहर के भोजन के समय के बाद, बिपिन बाबू को एहसास हुआ कि सम्भवत: वह अपनी कुर्सी पर बैठकर काम नहीं कर सकते। फर्म के साथ पच्चीस वर्षों से काम करते ऐसा कभी नहीं हुआ था। उनकी ख्याति एक अथक, कर्त्तव्यनिष्ठ कार्य करने वाले की थी। मगर आज उनका सिर चकरा रहा था।

ढाई बजे घर लौटकर बिपिन बाबू बिस्तर पर लेट गए और शान्त रहकर स्पष्ट सोचने का प्रयास किया। वह जानते थे सिर में चोट लगने से स्मरणशक्ति का खोना सम्भव था मगर उन्हें एक भी उदाहरण के बारे में मालूम नहीं था जहाँ किसी को एक घटना को छोड़कर सब कुछ याद हो—बिल्कुल हाल ही में घटी एक महत्त्वपूर्ण घटना। वह सदा से राँची जाना चाहते थे; वहाँ जाना, कार्य करना और याद न आना, यह बिल्कुल असम्भव था।

साढ़े सात बजे बिपिन बाबू का नौकर आया और बोला, ''चुनी बाबू, श्रीमान! कह रहे हैं कुछ बहुत महत्त्वपूर्ण है।

बिपिन बाबू जानते थे चुनी क्यों आए हैं। चुनीलाल उनके साथ विद्यालय में थे। पिछले दिनों से वे परेशानी में थे और एक नौकरी के लिए उनसे मिलने आते रहते थे। बिपिन बाबू जानते थे कि उनके लिए कुछ भी करना सम्भव नहीं था और वास्तव में, उन्होंने उनसे कहा भी। मगर चुनी, खोटे सिक्के के समान वापस आते रहते।

बिपिन बाबू ने कहलावा भिजवाया कि उनका चुनी से मिलना केवल आज ही नहीं बल्कि अनेक सप्ताह तक सम्भव नहीं था।

मगर जैसे ही नौकर ने कमरे से बाहर कदम रखा, बिपिन बाबू को लगा कि शायद '58 की यात्रा के बारे में चुनी को कुछ पता हो। उनसे पूछने में कोई हानि नहीं थी।

बिपिन बाबू तेजी से सीढ़ियाँ उतर कर बैठक में पहुँचे। चुनी जाने ही वाले थे मगर बिपिन बाबू को आता देख, वह आशा के साथ घूमे।

बिपिन बाबू ने इधर-उधर की बातें नहीं की और सीधे मुद्दे पर आये।

''सुनो, चुनी—मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ। तुम्हारी स्मरणशक्ति अच्छी है और तुम मुझसे लम्बे समय से मिलते रहे हो। अपने ध्यान को पीछे ले जाओ और मुझे बताओ—क्या मैं '58 में राँची गया था?''

चुनी बोले, '' '58? '58 ही रहा होगा और या फिर '59 था?''

''तुम्हें विश्वास है मैं राँची गया था?''

चुनी के आश्चर्यचकित चेहरे पर चिन्ता का भाव था।

''क्या तुम्हें जाने के बारे में तनिक भी संदेह है?''
''क्या मैं गया था? क्या तुम्हें ठीक से याद है?''
चुनी सोफे पर बैठ गये, बिपिन को देर तक घूरा और बोले, ''बिपिन, क्या तुम मादक द्रव्य या ऐसा कुछ लेने लगे हो? जहाँ तक मैं जानता हूँ, ऐसे मामलों में तो तुम्हारा रिकार्ड साफ है। मुझे पता है कि पुरानी मित्रताएँ तुम्हारे लिए अधिक मायने नहीं रखतीं, मगर कम-से-कम तुम्हारी स्मरणशक्ति तो अच्छी थी। तुम वास्तव में ऐसा नहीं कह सकते कि तुम राँची की यात्रा के बारे में भूल गए हो?''
बिपिन बाबू को चुनी की अविश्वासपूर्ण घूरती हुई नजरों से घूमना पड़ा।
''तुम्हें याद है मेरी अन्तिम नौकरी क्या थी?'' चुनीलाल ने पूछा।
''बिल्कुल। तुम एक ट्रैवल एजेन्सी में काम करते थे।''
''तुम्हें वह याद है और यह याद नहीं कि वह मैं ही था जिसने तुम्हारी राँची की रेलवे बुकिंग करवाई थी? मैं तुम्हें स्टेशन पर छोड़ने गया था, तुम्हारे कंपार्टमेंट में एक पंखा चल नहीं रहा था—मैंने एक बिजलीवाले को बुलाकर उसे ठीक करवाया था। क्या तुम सब कुछ भूल गए हो? क्या मामला है तुम्हारे साथ? तुम्हें पता है तुम ठीक नहीं लग रहे हो।''
बिपिन बाबू ने आह भरी और अपना सिर हिलाया।
''मैं बहुत अधिक कार्य कर रहा हूँ,'' वे अन्त में बोले। ''वह कारण हो सकता है। किसी विशेषज्ञ से परामर्श लेना पड़ेगा।''
निस्सन्देह यह बिपिन बाबू का हाल ही था जिसने चुनीलाल को एक नौकरी के बारे में कुछ भी बिना बोले ही जाने को मजबूर कर दिया।
परेश चंदा एक जोड़ी चमकीली आँखें और पैनी नाक वाले एक नौजवान चिकित्सक थे। जब उन्होंने बिपिन बाबू के लक्षणों के बारे में सुना तो वे विचारशील हो गये। ''देखिए डॉ० चंदा,'' बिपिन बाबू निराशा से बोले, ''आपको मेरी इस भयानक बीमारी का इलाज करना होगा। मैं नहीं बता सकता यह किस प्रकार मेरे कार्य को प्रभावित कर रही है।''
डॉ० चंदा ने अपना सिर हिलाया।
''क्या आप जानते हैं, मि० चौधरी,'' डॉ० चंदा बोले। ''मेरा आपके जैसे मामले से कभी भी पाला नहीं पड़ा। सच में, यह मेरे अनुभव के क्षेत्र से बहुत बाहर है। मगर मेरा एक सुझाव है। मैं नहीं जानता कि यह कार्य करेगा या नहीं, मगर प्रयास कर सकते हैं। इसमें कोई हानि नहीं होगी।''
बिपिन बाबू बेचैनी से आगे की ओर झुके।
''जहाँ तक मैं सोच पा रहा हूँ,'' डॉ० चंदा बोले, ''और मैं सोचता हूँ आप की भी यही राय है—आप राँची गए होंगे, मगर किसी अंजान कारण से, पूरी घटना आपके मस्तिष्क से खिसक गई है। मेरा सुझाव है कि आप फिर एक बार राँची जाइए। उस स्थान के दृश्य आपको आपकी यात्रा के बारे में हो सकता है याद दिला दें। यह असम्भव नहीं है। इस से अधिक मैं इस क्षण में नहीं कर सकता। मैं आपको एक तन्त्रिका टॉनिक और एक तनाव कम करने की औषधि लिख रहा हूँ। निद्रा आवश्यक है अथवा लक्षण और स्पष्ट हो जाएँगे।''
अगले सवेरे बिपिन बाबू को तनिक बेहतर लगा।

नाश्ते के बाद, उन्होंने अपने कार्यालय फोन किया, कुछ निर्देश दिये और फिर उसी शाम की राँची के लिए प्रथम श्रेणी की टिकिट ली।

IV

अगले सवेरे राँची में ट्रेन से उतरते हुए उन्हें एकदम से ज्ञात हुआ कि वह वहाँ कभी भी पहले नहीं आये हैं।

वे स्टेशन से बाहर आए, एक टैक्सी ली और थोड़ी समय तक नगर का भ्रमण किया। उन्हें मालूम हुआ कि वह सड़कों, इमारतों, बाजारों, मोराबादी पहाड़ी, किसी को भी तनिक नहीं पहचान पा रहे थे। क्या हुडरू झरने की यात्रा सहायता करेगी? उन्हें ऐसा विश्वास नहीं था, मगर उसी समय वह उस भावना के साथ नहीं जाना चाहते थे कि उन्होंने पर्याप्त प्रयास नहीं किये थे। इसलिए उन्होंने एक कार की व्यवस्था की और दोपहर में हुडरू के लिए चल दिये।

हुडरू में उसी दोपहर पाँच बजे, पिकनिक मना रहे समूह में से दो गुजराती सज्जनों ने बिपिन बाबू को एक चट्टान के निकट बेहोश पड़े पाया। जब वे होश में आये, बिपिन बाबू के मुँह से पहले निकले शब्द थे, ''मैं समाप्त हुआ। कोई आशा नहीं है।''

अगले सवेरे, बिपिन बाबू वापस कलकत्ता में थे। उन्हें मालूम हुआ कि वास्तव में उनके लिए कोई आशा नहीं थी। जल्दी ही वे सब कुछ खो देंगे: उनकी कार्य करने की इच्छा, उनका आत्मविश्वास, उनकी क्षमता, उनका मानसिक सन्तुलन। क्या उनका अन्त पागलखाने में होगा? बिपिन बाबू आगे न सोच पाये।

घर वापिस पहुँच कर उन्होंने डॉ० चंदा को फोन करके उन्हें घर आने को कहा। तब नहाने के पश्चात् वे अपने सिर पर बर्फ का थैला रखे बिस्तर पर लेट गये। तभी उनके नौकर ने उन्हें एक पत्र लाकर दिया जो कोई लैटर बॉक्स में छोड़ गया था। वह हरे रंग का लिफाफा था जिस पर उनका नाम लाल स्याही से लिखा था।

उनके नाम के ऊपर 'अविलम्ब और गोपनीय' लिखा था। अपनी हालात के बावजूद, बिपिन बाबू का विचार था कि उन्हें पत्र को पढ़ना चाहिए। उन्होंने लिफाफा फाड़ कर पत्र बाहर निकाला। उन्होंने यह पढ़ा—

प्रिय बिपिन,

मुझे नहीं पता था कि समृद्धि तुम में इस प्रकार का बदलाव लाएगी जैसा कि इसने किया है। क्या तुम्हारे लिए अपने पुराने दुर्भाग्यशाली मित्र की सहायता करना इतना मुश्किल था? मेरे पास पैसा नहीं है, इसलिए मेरे साधन सीमित हैं। मेरे पास कल्पना है जिसका उपयोग मैंने तुम्हारे असंवेदनशील व्यवहार का बदला लेने में किया।

खैर, अब तुम फिर से ठीक हो जाओगे। एक प्रकाशक मेरे द्वारा लिखे गये एक उपन्यास पर विचार कर रहा है। अगर वह उसे पर्याप्त पसंद कर लेता है तो मेरे अगले कुछ महीने ठीक से निकल जाएँगे।

तुम्हारा, चुनीलाल

जब डॉ० चंदा आये, बिपिन बाबू बोले, ''मैं अच्छा हूँ, जैसे ही मैं ट्रेन से राँची में उतरा, वह सब मुझे तुरन्त याद आ गया।''

''एक अनोखा मामला,'' डॉ० चंदा ने कहा, ''मैं इसके बारे में चिकित्सकीय पत्रिका में अवश्य लिखूँगा।''

''मैंने आपको इसलिए बुलवाया,'' बिपिन बाबू बोले, ''राँची में गिरने के कारण कूल्हे में दर्द है। अगर आप कोई दर्द निवारक औषधि लिख देते तो...''

Exercise

A. 1. (c) 2. (b) 3. (a)

B. 1. Bertram, 2. Japan 3. receiver, head

C. 1. Bepin Babu was a serious and hardworking man. The evidences are that he lived alone, was not a good mixer, had few friends and didn't like spending time in idle chat. He spent his free time in reading books and had been working with the same company for twenty five years.

2. Bepin Babu changed his mind about meeting Chunilal as it stuck him that Chuni might remember something about the '58 trip. The result of the meeting was Chunilal confirming that Bepin Babu had indeed gone to Ranchi in '58. This information confused Bepin Babu more.

3. Bepin Babu lost consciousness at Hudroo Falls because he realised that he had come to that place for the first time. This confirmed his worst fears that he had some terrible mental illness.

4. When Bepin Babu realised that Chunilal had tricked him, his immediate reaction was the one of utter relief (that he had no mental illness).

D. Do it yourself.

E. Do it yourself.

F. Do it yourself.

G. (i) have to (ii) had to (iii) has to (iv) have to
(v) had to (vi) had to (vii) had to

H. Do it yourself.

I. (i) Column B. (ii) Column B. (iii) Column B. (iv) Column B.

J. (i) ***Ans :*** Stop beating about the bush and tell me what you want.
Idiom : beat about the bush : to talk about something for a long time without mentioning the main point.

(ii) ***Ans :*** If you don't pay attention to the announcement, you might board the wrong train.
Idiom : don't pay attention : if you are not attentive.

(iii) ***Ans :*** The villagers tried to pin the crime on the young woman.
Idiom : tried to pin : to blame someone for something.

(iv) ***Ans :*** Bepin Babu loved telling people that he was under doctor orders to eat early.
Idiom : under doctor's orders : was heeding to doctor's instructions.

(v) ***Ans :*** The teacher raised his eyebrows when the students said that they had revised all their lessons.

Idiom : raised his eyebrows : reacted with surprise or mild disapproval.

❑

2. The Last Bargain

आइए आरंभ करें!

एक सौदा एक समझौता होता है जिसमें दोनों व्यक्ति एक-दूसरे के लिए कुछ करने का वादा करते हैं। कोई कार्य की तलाश कर रहा है, कार्य मिलने का इंतजार कर रहा है। वह एक सौदा करता है मगर उसे बेकार सोचता है। वह दो बार और प्रयास करता है मगर किसी को भी पसंद नहीं करता। अन्त में, आखिरी सौदे में, उसे बिना किसी भुगतान के, कार्य पर रख लिया जाता है, वह अति प्रसन्न होता है। सौदा क्या है और सबसे अच्छा क्यों है?

''आइए और मुझे नौकरी पर रखिए,'' सवेरे मैं चिल्लाया। मैं पत्थर लगी सड़क पर चल रहा था।
हाथ में तलवार लिए राजा अपने रथ पर आया।
मेरा हाथ पकड़कर वह बोला, ''मैं तुम्हें अपनी शक्ति से नौकरी पर रखूँगा।''
मगर उसकी शक्ति कुछ नहीं थी और वह अपने रथ पर चला गया।
दोपहर की गर्मी में मकानों के दरवाजे बंद थे।
मैं टेढ़ी-मेढ़ी गली में भटक रहा था।
अपना सोने का बस्ता लिए एक वृद्ध व्यक्ति आया।
उसने सोचा और कहा, ''मैं अपने धन से तुम्हें नौकरी पर रखूँगा।''
उसने अपने सिक्कों को एक-एक कर तोला, मगर मैं मुड़ गया।
शाम हो रही थी। बगीचे की बाड़ में फूल खिले थे।
एक सुंदर कन्या आई और बोली, ''मैं तुम्हें एक मुस्कान से नौकरी पर रखूँगी।''
उसकी मुस्कान फीकी होकर आँसुओं में पिघल गई और वह अँधेरे में अकेले वापस चली गई।
रेत पर सूर्य चमक रहा था और समुद्र की लहरें हिलोरें ले रही थीं।
एक बालक सीपियों से खेल रहा था।
उसने अपना सिर उठाया और लगा मुझे जानता था और बोला,
''मैं तुम बिना किसी के नौकरी पर रखूँगा।''
अब से आगे बच्चे के साथ खेलने के सौदे ने मुझे मुक्त कर दिया।

Exercise

A.	1. (c)	2. (b)	3. (b)
B.	1. walking	2. Sword, chariot	3. child, shells

C. 1. (e) 2. (a) 3. (b) 4. (c) 5. (d)

D. 1. A man wanting to be hired (a labourer) is the speaker in the poem.

2. The man turned down the old man's offer of a lot of money because he did not need it. He valued his freedom more than becoming a slave for gold.

3. After meeting the child, the speaker felt that he would get joy, freedom and satisfaction.

❑

3. The Summit Within

आइए आरंभ करें!

मेजर एच०पी०एस० अहलूवालिया सन् 1965 में माउण्ट एवरेस्ट पर प्रथम सफल भारतीय अभियान के सदस्य थे। विश्व के सबसे ऊँचे बिन्दु पर खड़े होकर उन्हें कैसा अनुभव हुआ? आइए उनकी कहानी-शिखर पर चढ़ना और फिर, भीतर के शिखर पर चढ़ने जैसा अधिक मुश्किल कार्य-उन्हीं के शब्दों में सुनते हैं।

जब मैं एवरेस्ट के शिखर पर खड़ा होकर, हमारे नीचे मीलों फैले विस्तृत क्षेत्र को देख रहा था, मेरे भीतर उमड़ रही सारी भावनाओं में मुख्य विनम्रता थी। मेरे भीतर का भौतिक रूप कहता प्रतीत हो रहा था, "ईश्वर का धन्यवाद, सब समाप्त हो गया!" यद्यपि प्रसन्न होने की बजाय वहाँ उदासी की झलक थी। क्या वह इसलिए था कि मैंने चढ़ाई में 'सर्वोच्च' कर लिया था और उस से ऊँचा चढ़ने को कुछ और नहीं होगा और इसके बाद सारी सड़कें नीचे ही को जाएँगी?

एवरेस्ट के शिखर पर चढ़ने के पश्चात् आप प्रसन्नता और कृतज्ञता के गहरे अहसास से अभिभूत हो जाते हैं। यह वह प्रसन्नता है जो पूरे जीवन बनी रहती है। यह अनुभव आपको पूरी तरह बदल देता है। वह व्यक्ति जो पर्वतों पर गया हो वह पहले जैसा कभी भी नहीं रहता है।

एवरेस्ट पर चढ़ने के पश्चात् जब मैं पीछे के जीवन को देखता हूँ तो मैं दूसरे शिखर-मस्तिष्क का शिखर, न कम दुर्जेय और न चढ़ने में आसान-पर टिप्पणी करे बिना नहीं रह पाता।

जब हम शिखर से नीचे उतर रहे थे, एक बार शारीरिक थकान दूर हो गई, मैंने स्वयं से यह प्रश्न पूछना आरम्भ किया कि मैं एवरेस्ट पर क्यों चढ़ा था। शिखर पर चढ़ने के कार्य ने मेरी कल्पना को इतना कस के क्यों जकड़ रखा था? यह पहले से ही अतीत की बात थी जो कल ही कर ली गई थी। हर गुजरते दिन के साथ यह और दूर होती जाएगी और तब क्या रह जाएगा? क्या मेरी स्मरणशक्ति धीरे-धीरे धुँधली होती जाएगी?

इन सब विचारों ने मुझे स्वयं से प्रश्न करने को प्रेरित किया है कि लोग पर्वतों पर चढ़ते क्यों हैं। इस प्रश्न का उत्तर देना आसान नहीं है। सबसे सरल उत्तर होगा, जैसा कि औरों ने कहा है, "क्योंकि वह वहाँ है।" यह बड़ी समस्याएँ प्रस्तुत करता है। मानव को बाधाएँ पार करने में आनन्द आता है। पर्वतों पर चढ़ने में बाधाएँ भौतिक होती हैं। शिखर पर चढ़ाई का अर्थ है धैर्य,

दृढ़ता और इच्छाशक्ति। इन भौतिक गुणों का प्रदर्शन निस्सन्देह उत्साहवर्धक होता है और मेरे लिए भी था।

मेरे पास प्रश्न का अधिक व्यक्तिगत उत्तर है। बचपन से ही मैं पर्वतों की ओर आकर्षित रहा हूँ। मैं पर्वतों से दूर मैदानों में खोया हुआ और दुखी था। पर्वत प्रकृति का सर्वोत्तम रूप होते हैं, उनकी सुन्दरता और महिमा एक महान चुनौती पेश करती है और कइयों की तरह मेरा विश्वास है कि पर्वत ईश्वर से संवाद का एक साधन हैं।

एक बार यह स्वीकार कर लेने पर, प्रश्न रहता है एवरेस्ट ही क्यों? क्योंकि यह सबसे ऊँचा है। सबसे अधिक शक्तिशाली है और इसने अनेक प्रयासों को विफल कर दिया है। यह किसी की ऊर्जा की अन्तिम बूँद भी निचोड़ लेता है। यह चट्टान और बर्फ के साथ क्रूर संघर्ष है। एक बार आरम्भ करने के पश्चात् इसे बीच में नहीं छोड़ा जा सकता चाहे किसी का जीवन दाँव पर ही क्यों न लगा हो। वापसी का मार्ग भी उतना कठिन होता है जितना कि आगे जाने का मार्ग और फिर जब शिखर पर चढ़ाई कर ली जाती है तो कुछ कर लेने की प्रसन्नता और उल्लास होता है, एक युद्ध लड़ने और जीतने का अहसास होता है। विजय और आनंद की भावना होती है।

दूरी पर एक चोटी को देखकर मैं एक दूसरी दुनिया में चला जाता हूँ। मैं स्वयं के भीतर एक बदलाव का अनुभव करता हूँ जिसे केवल आध्यात्मिक ही कहा जा सकता है। इसकी सुन्दरता से, अलगाव से, शक्ति से, कठोरता से और रास्ते में आने वाली बाधाओं से, चोटी मुझे अपनी ओर खींचती है—जैसा कि एवरेस्ट ने किया था। यह वह चुनौती है जिसका प्रतिरोध करना मुश्किल है।

पीछे देखकर पाता हूँ कि मैंने पूरी तरह नहीं समझा पाया कि मैं एवरेस्ट पर क्यों चढ़ा था। यह ऐसा है मानो आप इस प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं कि आप साँस क्यों लेते हैं? आप अपने पड़ोसी की सहायता क्यों करते हैं? आप अच्छे कार्य क्यों करना चाहते हैं? इसका कोई अन्तिम उत्तर सम्भव नहीं है।

और फिर यह तथ्य भी है कि एवरेस्ट केवल एक भौतिक चढ़ाई नहीं है। वह व्यक्ति जो पर्वत के ऊपर गया हुआ हो वह इसे बड़े ब्रह्माण्ड में अपनी लघुता के बारे में एक विशेष प्रकार से सचेत हो जाता है।

पर्वत पर भौतिक विजय उपलब्धि का केवल एक भाग है। इसमें इससे अधिक भी कुछ है। इसके पश्चात् तृप्ति की भावना आती है। इसमें अपने आस-पास से ऊपर उठने की गहरी इच्छा की सन्तुष्टि होती है। यह रोमांच से मानव का शाश्वत प्रेम है। यह अनुभव केवल भौतिक नहीं है। यह भावनात्मक है। यह आध्यात्मिक है।

शिखर की ओर अन्तिम ऊँचाइयों पर एक सामान्य चढ़ाई पर विचार करें। आप एक दूसरे पर्वतारोही के साथ रस्सी साझा कर रहे हैं। आप अविचल हो जाते हैं। वह कड़ी बर्फ में सीढ़ियाँ काटता है। फिर वह जोर लगाता है और आप ऊपर की ओर बढ़ते हैं। चढ़ाई कठिन है। आप प्रत्येक कदम के साथ आपकी प्रत्येक नस में तनाव होता है। प्रसिद्ध पर्वतारोहियों ने दूसरों द्वारा दी गई सहायता के बारे में लिखा है। उन्होंने यह भी लिखा कैसे उन्हें केवल उसी सहायता की आवश्यकता थी। नहीं तो वे इसे छोड़ देते। साँस लेना मुश्किल है। आप इसमें स्वयं को आ जाने देने के लिए स्वयं को कोसते हैं। आपको आश्चर्य होता है आप चढ़े ही क्यों। कुछ क्षण

आते हैं जब आप वापस जाने की सोचते हैं। ऊपर की बजाय नीचे जाना कितना आरामदायक होगा। किन्तु आप उस मनोदशा से एकदम से बाहर आ जाते हैं। आप में कुछ है जो आपको संघर्ष करना नहीं छोड़ने देता और आप चलते जाते हैं। आपका साथी आपके साथ है। केवल पचास फीट और या शायद सौ फीट। आप स्वयं से पूछते हैं: क्या कोई अन्त नहीं है? आप अपने साथी को और वह आपको देखता है। आप एक दूसरे से प्रेरित होते हैं और फिर पहले से पता चले बिना, आप शिखर पर होते हैं।

शिखर से चारों ओर देखते हुए आप स्वयं से कहते हैं यह सार्थक था। दूसरी चाँदनी जैसी चोटियाँ बादलों के मध्य से दिखती हैं। अगर आप भाग्यशाली हों तो सूर्य उन पर हो सकता है। चारों ओर की चोटियाँ आपके शिखर के गले में रत्नजड़ित हार सा लगती हैं। नीचे आप दूर तक ढलुवा विशाल घाटियाँ देखते हैं। एक पर्वत के शिखर से केवल नीचे झाँकना ही एक शानदार और समृद्ध अनुभव है। आप झुकते हैं और जिस किसी भी ईश्वर को मानते हैं, उसके सामने दण्डवत प्रणाम करते हैं।

मैंने एवरेस्ट पर गुरु नानक का एक चित्र छोड़ा। रावत ने देवी दुर्गा का एक चित्र छोड़ा। फू दोरजी ने बुद्ध का एक अवशेष छोड़ा। एडमंड हिलेरी ने चट्टानों और पत्थरों के ढेर के नीचे एक क्रॉस दबा दिया। ये प्रतीक विजय के नहीं बल्कि श्रद्धा के हैं।

शिखर पर चढ़ने का अनुभव आपको पूरी तरह बदल देता है। एक और शिखर है। यह आपके स्वयं के भीतर है। यह आपके स्वयं के मस्तिष्क के भीतर है। प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर स्वयं की पर्वत की चोटी लिए रहता है। स्वयं का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे इस पर चढ़ना होगा। यह भयावह और अनारोहणीय है। इसे किसी और के द्वारा नहीं चढ़ा जा सकता। आपको यह स्वयं ही करना होगा। किसी पर्वत के शिखर पर चढ़ने का कार्य भीतर के पर्वत पर चढ़ाई करने के कार्य जैसा ही है। दोनों चढ़ाइयों के प्रभाव समान होते हैं। पर्वत जिस पर आप चढ़ रहे हैं भौतिक या भावनात्मक या आध्यात्मिक हो, चढ़ाई वास्तव में आपको बदल देगी। यह आपको विश्व और स्वयं के बारे में बहुत कुछ सिखा देगी।

मैं सोचने का साहस करता हूँ कि एक एवरेस्टर होने के मेरे अनुभव ने मुझे जीवन की कठिनाइयों का कड़ा मुकाबला करने की प्रेरणा प्रदान की है। पर्वत पर चढ़ना एक सार्थक अनुभव था। भीतरी शिखर पर विजय भी उतनी ही सार्थक होती है। भीतर के शिखर शायद एवरेस्ट से ऊँचे होते हैं।

Exercise

A. 1. (c) 2. (b) 3. (a)

B. 1. physical 2. mountains, communion 3. peaks, clouds

C. 1. The three qualities that played a major role in the author's climb were endurance, persistence and willpower.

2. Although adventure is risky, it is pleasurable too. This implies that climbing a mountain is a great challenge filled with difficulties, but overcoming those hurdles boosts the confidence, endurance and willpower of the climber. The author gives the example of the mighty Mount Everest; reaching its summit is an achievement in itself. There

is a great sense of exhilaration, joy and fulfillment in being able to scale such great heights. There is a feeling of victory and happiness. Hence, the experience is not merely physical but also emotional and spiritual.

3. Being the mightiest and highest mountain peak in the world, Mount Everest has its own special charm and beauty. The author found it irresistible due to its beauty, ruggedness and the obstacles that he encountered while climbing to its summit. Every ounce of his energy was utilized in climbing the mountain covered with rock and ice. One who decides to climb Everest cannot give up his/her dream by returning half way even when one's life is at stake. This is because when a person climbs to the summit of a mountain, one is filled with a great sense of exhilaration, joy and fulfillment for being able to scale such great height. This gives him/her a sense of extreme joy and happiness and a feeling of victory and satisfaction. These were some of the reasons why the author found the Mount Everest to be extremely irresistible.
4. Climbing a mountain and reaching its peak successfully requires endurance, persistence and willpower. Therefore, the experience is not merely physical but also emotional and spiritual. It satisfies a climber's eternal love for adventure which gives one a sense of fulfillment, satisfaction and a deep urge to rise over and above the surroundings.
5. The author left on Mount Everest a picture of Guru Nanak. Rawat left a picture of Goddess Durga. Phu Dorji left a relic of the Buddha and Edmund Hillary buried a cross under a cairn (a heap of rocks and stones) in the snow. These were not merely symbols of conquest but of reverence.
6. As an Everester, the author experienced a great sense of fulfillment and satisfaction. It encouraged him to face the ordeals of life in a determined manner. It taught him that the conquest of the internal summit is also equally important compared to climbing a mountain. He realised that it will give him a better and fuller knowledge about himself which no one else other than him can scale to meet his true self.

D. 2. Endurance, persistence and will power are the qualities that are required in a climber to overcome the challenges and have a wonderful experience.

3. The majestic beauty of the mountains poses a considerable challenge for climbers as they are the medium of communion with the Almighty.
4. Although climbing a mountain is a difficult task, reaching the summit gives a sense of fulfillment and satisfaction to the climber.
5. Climbing a mountain is not merely a physical activity, but it is also both emotional and spiritual, as mountains are a means of communion with the Almighty.

E. Do it yourself.

F. (i) at once (ii) at all (iii) at first sight
(iv) at a low ebb (v) at hand

G. (i) endurance (ii) persistence (iii) significance
(iv) confidence (v) maintainence (vi) abhorrence

H. **(i)**

A	**B**
remote	far away from
means	method(s)
dominant	most prominent
formidable	difficult to overcome
overwhelmed	be overcome/overpowered

(ii) (a) formidable (b) means
(c) remote (d) Overwhelmed
(e) dominant

❑

4. The School Boy

आइए आरंभ करें!

कविता में स्कूली लड़का प्रसन्न नहीं है। वह दुखी क्यों है? वह अपनी तुलना पिंजरे में रहने वाले पक्षी से अथवा एक पौधा, जो खिलने के स्थान पर मुरझा जाता है, से क्यों करता है।

मुझे गर्मी के सवेरे उठना पसंद है,
जब पक्षी हर वृक्ष पर गाते हैं;
दूर का शिकारी अपनी तुरही बजाता है
और अबाबील मेरे साथ गाती है।
ओ! कितनी प्यारी संगति है।
मगर गर्मी की सवेरे विद्यालय जाना,
ओ, यह सारा आनंद भगा देता है;
शिक्षकों की निगरानी में,
छोटे बच्चे पूरा दिन व्यतीत करते हैं
आहें भरने और निराशा में।
आह! कभी-कभी मैं आलसी होकर,
अनेक बेचैन घंटे व्यतीत करता हूँ।
न तो मैं अपनी पुस्तक में आनंद ले पाता हूँ,
और न ही विद्या के कुंज में बैठ पाता हूँ,
जो कि उबाऊ, दोहराव सहित और सीमाओं वाली है।
कैसे एक पक्षी, जिसका जन्म ही आनंद लेने को हुआ है

पिंजरे में बैठकर गीत गा सकता है
कैसे एक बच्चा, जब डर सताते हैं,
अपने मुलायम पंखों को झुकाये हुए,
अपनी आनंददायक आयु को भूल सकता है।
हे, माता और पिता, अगर कलियों को तोड़ा जाए
और फूलों को उखाड़ा जाए
और नाजुक पौधों से छीन लिया जाए
उनका आनंद वसंत के दिन,
दुख और चिन्ता के द्वारा,
गर्मी में आनन्द कैसे आएगा,
और वृक्ष कैसे फल देंगे?

Exercise

A. 1. (c) 2. (b) 3. (c)

B. 1. horn 2. book, delight 3. joy, cage, sing

C. 1. The words and phrases that reflect the child's happiness and joy are "I love to rise in a summer morn", "the skylark sings with me" and "O! what sweet company."

2. The words or phrases that reflect the change of mood and tone in stanza 2 are "drives all joy away", "cruel eye outworn" and "In sighing and dismay."

3. (iii) the dull/uninspiring life at school with lots of work and no play.

4. (ii) Nor can I learn anything at school though teachers go on lecturing and explaining.

❑